में सम्पूर्ण ने लिखा - "Man is the product of earth's surface" & हंटिंग्टन भी पर्यावरण निश्चयवाद के घोर समर्थक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक Civilization and climate, Human n Habitat और season of Birth आदि में मनुष्य पर भौतिक प्रभावों (पर्यावरण) को स्पष्ट रूप से उजागर किया। स्पष्ट है कि पर्यावरणीय निश्चयवादी समर्थकों का भौगोलिक चिंतन पर वर्चस्व 1920 तक बना रहा।

(2) उद्देश्यमूलक उपागम → यह उपागम इस बात पर अटूट विश्वास पर आधारित है कि Man is superior to nature and all creature. अर्थात ईश्वर ने पहले मनुष्य को बनाया और फिर उसके उपयोग के प्रकृति का निर्माण किया यानि वरीयता के अनुक्रम में

ईश्वर → मनुष्य → प्रकृति

यानि मनुष्य प्रकृति से श्रेष्ठ है प्राथमिक कृति है और प्रकृति गौण कृति। इसका अर्थ है कि

मनुष्य की स्वार्थ सिद्धि पहले आती है और पर्यावरण की सुरक्षा बाद में। इस विचारधारा का परिणाम यह हुआ कि भावी खतरों से बेखबर प्राकृतिक संसाधनों की अनियंत्रित, लापरवाह विदोहन किया जाने लगा। इस विचारधारा के कारण उत्तरी अमेरिका, यूरोप जैसे देशों ने अपने उपनिवेशों में भी जमकर संसाधनों का विदोहन किया। जिसके कारण कई पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो गई 1750 के बाद से North america और पश्चिम यूरोप में यह विदोहन का दौर शुरू हुआ था और तीन शताब्दी तक चलता रहा था जिसके कारण वर्तमान समय में अधिकांश पर्यावरणीय समस्याएं देखने को मिल रही है।

(3) सम्भववादी उपागम → सम्भावनावादी विचारधारा

फ्रांसीसी चिंतकों की देन है। इस चिंतन का जन्म पर्यावरणीय निश्चयवाद के विरोध में हुआ था। यह चिंतन विडाल-डि-ला-ब्लाश की दी हुई है थी। जो इस

बात से सहमत थी कि पर्यावरण मानव जीवन को प्रभावित करता है परन्तु इस बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं थी कि वो मानव जीवन को नियंत्रित करता है या उसके विकास की गति या दिशा निर्धारित करता है।

विचारधारा की मान्यता :→ यह विचारधारा इस मान्यता पर निर्भर थी कि विकास के सारे साधन प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए है। इन साधनों में विकास की अनेक सम्भावनाएं मौजूद है। इसमें से किस सम्भावना या दिशा की चुनाव होना है यह पूर्णतः मानव पर निर्भर करता है। फेवर ने सम्भावनावादी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "कहीं भी विवशताएं नहीं होती, वरन सभी जगह सम्भावनाएं होते है तथा मनुष्य इन सम्भावनाओं का स्वामी होने के नाते उसके उपयोग के लिए स्वयं निर्णायक होता है।"